रतनबाई अदी मूंहजी, आऊं करियां आंसे गाल।
सुहाग मूके डिनाऊं घणों, अदी थेईस आऊं निहाल।। ११ ।।

हे मेरी बहन रतनबाई! (बिहारीजी) मैं तुमसे बातें करती हूं। मेरे धनी ने बहुत सुख दिया जिससे मैं निहाल (कृतकृत्य) हो गई।

मूं पर मंगई हिकडी, पिरी सुख डिंना घणी पर।
हिंनी सुखे संदियूं गालियूं, अदी कंदासी वंजी घर।। १२ ।।

मैंने धनी से एक मांग रखी थी, पर धनी ने कई तरह से सुख दिए। इन सुखों की बातें घर चलकर करूंगी।

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। ६७३ ।।

श्री लखमीजीनूं द्रष्टांत

हूं जाणूं निध एकली लऊं, धणी तणां सुख सघला सहूं।
ए सुख बीजा कोणे नव दऊं, वली वली तमने स्या ने कहूं।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मुझे ऐसा लगता है कि धनी के सब सुखों को मैं अकेली ले लूं और यह सुख और किसी को न दूं। बार-बार मैं तुमको किसलिए कहूं?

ए वचन कांई एम न केहेवाय, जीव मारो मांहें दुखाय।
मूने घणूं विमासण थाय, पण जाक्यो मारो नव जकाय।। २ ।।

यह वचन ऐसे ही नहीं कहे जाते। मेरा जीव दुःखी होता है, परन्तु विचार करके देखती हूं तो यह रोकने से रुकता नहीं है।

धणी कहावे तो हूं कहूं, नहीं तो ए निध कांई एम न दऊं।
देतां मारो जीव निसरे, ए वचन कांई मूने न विसरे।। ३ ।।

धनी कहलाते हैं तो कहती हूं। नहीं तो, यह वस्तु ऐसे ही नहीं देना चाहती। यह वस्तु देने में मेरा जीव निकलता है। यह वचन मुझे भूलते नहीं हैं।

में लीधा कठणाई करी, श्री धणी तणे चरणे चित धरी।
हूं घणुंए राखूं अंतर, पण सागर पूर प्रगट करे घर।। ४ ।।

मैंने धनी के चरणों को चित्त में लगाकर बड़ी कठिनाई से ग्रहण किया है, बड़े तरीके से इन्हें रखना चाहती हूं, परन्तु सागर की लहरों समान यह सुख हमारे घर की बात प्रकट करते हैं।

धणी कहावे अंतरगत रही, कह्यानी सोभा कालबुतने थई।
नही तो ए वचन केम प्रगट थाय, केहेतां घणूं कालजु कपाय।। ५ ।।

धनी मेरे अन्दर बैठकर इन वचनों को कहला रहे हैं। मेरे तन को तो कहने की शोभा मिल रही है। नहीं तो, यह वचन ऐसे नहीं कहे जाते, कहने में मेरा कलेजा फटता है।

रखे जाणो वचन कह्या अचेत, केहेतां जीवे दुख दीठां अनेक।
ज्यारे जीवसूं विचारी जोयूं मन, जे आ हूं केहा कहूं छूं वचन।। ६ ।।

ऐसा भी नहीं समझना कि यह वचन मैं बेहोशी में कह रही हूं, क्योंकि इनके कहने में जीव को बहुत दुःख हुआ है। जीव और मन से विचार करके देखती हूं कि मैं यह कौन से वचन तुमको कह रही हूं।

Nijanand App

एक लवो मारी बुधे न निसरे, पण धणी आपोपूं प्रगट करे।
हवे जो साथ करो कांई बल, तो पूरण सोभा लेओ नेहेचल।। ७ ।।

एक शब्द भी मेरी बुद्धि से नहीं निकलता, परन्तु आप धनी स्वयं प्रकट कर रहे हैं। अब सुन्दरसाथ तुम कुछ ताकत लगाओ, तो तुम्हें पूर्ण अखण्ड सुख की शोभा मिले।

भारे वचन छे जो घणूं, जो कांई ग्रहसो आपोपणूं।
ए वचन ऊपर एक कहूं विचार, सांभलो साथ मारा धामना आधार।। ८ ।।

यह वचन बहुत भारी (गम्भीर) हैं, किन्तु आप अपना समझकर ही ग्रहण करना। इन वचनों के लिए एक विचार बताती हूं। मेरे धाम के सुन्दरसाथ! ध्यान से सुनना।

धडथी मस्तक कोई अलगूं करे, तो अर्ध वचन मुखथी नव परे।
जो कोई सारे सघला संधाण, तो अर्ध लवो न केहेवाय निरवाण।। ९ ।।

धड़ से कोई सिर अलग कर दे तो भी आधा वचन मुख से नहीं निकलता। यदि कोई सारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दे तो भी एक शब्द भी नहीं कहा जा सकता।

साथ माटे कहूं सगाई जाणी, धणी ओलखजो घर रुदे आणी।
एम हाथ झालीने बीजो कोई नव दिए, अने एम देतां अभागी नवलिए।। १० ।।

सुन्दरसाथ को अपना सम्बन्धी जानकर कहती हूं कि अपने धनी को अपने तन के हृदय में बिठाकर पहचान करो। ऐसा हाथ पकड़ कर ज्ञान कोई नहीं देता और इस तरह से देने में जो नहीं लेता वह अभागा है।

तमे साथ मारा सिरदार, हवे आ द्रष्टांत जो जो विचार।
पाधरो एक कहूं प्रकास, सुकजी पाए पुरावुं साख।। ११ ।।

हे मेरे सुन्दरसाथ! तुम प्रधान हो। अब इस दृष्टान्त को देखकर विचार करना, मैं तुम्हें एक सीधी बात बताती हूं और शुकदेवजी की गवाही देती हूं।

एह जोईने टालो भरम, जीव कांईक हवे करो नरम।
वचन जीवसूं करो विचार, त्यारे ततखिण जीव ओलखसे आधार।। १२ ।।

इसे देखकर अपने संशय को मिटाओ और अपने जीव को कोमल करो। धनी के इन वचनों का जीव से विचार करो। तुरन्त अपने जीव से धनी को पहचान लोगे।

ओलखीने टालो अंतर, आपोपूं संभारो घर।
हवे घर तणी केही कहूं वात, वचन विचारी जो जो प्रकास।। १३ ।।

पहचान कर इस भेद को हटा दो। अपने आपको तथा घर को याद करो। अब घर की बात कहां तक कहूं? इन वचनों को विचार करके ज्ञान से देखना।

हवे सांभलो आ पाधरू द्रष्टांत, जीव जगवी जो जो एकांत।
चौद भवननो कहिए धणी, लीला करे वैकुंठ विखे घणी।। १४ ।।

अब एक सीधा दृष्टान्त सुनो और अपने जीव को जगाकर एकान्त में देखो। चौदह लोकों के जो धनी भगवान विष्णु हैं, वह बैकुण्ठ में अपनी लीला करते हैं।

Nijanand App

लखमीजी सेवे दिन रात, ऐहेनी छे मोटी विख्यात।
जे जीव वांछे पोते हेत घर, ते सेवे श्री परमेस्वर।। १५ ।।

लक्ष्मीजी दिन-रात इनकी सेवा करती हैं। इनकी भी बड़ी बात है। जो जीव अपनी भलाई के लिए बैकुण्ठ की चाहना करता है वह परमेश्वर (विष्णु भगवान) की सेवा करता है।

ब्रह्मादिक नारद छे देव, बीजा सुर नर अनेक करे एनी सेव।
ब्रह्मांड विखे केटला लऊं नाम, सहु कोई सेवे श्री भगवान।। १६ ।।

ब्रह्मा, नारद, आदि देवता हैं। दूसरे देव और मनुष्य सब इनकी सेवा करते हैं। ब्रह्माण्ड में कितने भी गिनाएं, सभी विष्णु भगवान की सेवा करते हैं।

सेवता न पामे पार, ए लीला एहनी छे अपार।
आगे सेवा कीधी छे घणे, ते जो जो वचन सुकजी तणें।। १७ ।।

इनकी सेवा करने पर भी पार नहीं मिला। इनकी लीला अपार (अनगिनत) है। पहले भी बहुत से लोगों ने इनकी सेवा की है। शुकदेवजी के वचनों से देखो।

एह छे एवो समरथ, सेवकना सारे अरथ।
हवे एह तणो जो जो गिनांन, मोटी मतनो धणी भगवान।। १८ ।।

यह ऐसे समर्थ हैं कि अपने सेवकों (भक्तों) के सब कार्य सिद्ध करते हैं। अब इनका भी इस प्रकार ज्ञान देखो। विष्णु भगवान भी बड़ी बुद्धि के मालिक हैं (पांच वासनाओं में से हैं)।

एक समे करि बेठा ध्यान, विसरी सरीर तणी सुध सान।
ए सदीवे चितवणी करे, पण बाहेर केहेने खबर न पडे।। १९ ।।

एक समय यह बैकुण्ठ में बैठे ध्यान कर रहे थे, इन्हें अपने तन की भी सुध नहीं थी। यह सदा ही इस प्रकार से मग्न होकर चिन्तन (योगमाया का) करते हैं, पर बाहर किसी को भी पता नहीं चलता।

एणे समे ध्यान थयो अति जोर, प्रेम तणी चंपाणी कोर।
लखमीजी आव्या एणे समे, मन अचरज पाम्या विस्मे।। २० ।।

एक बार यह ध्यान में ज्यादा मग्न हो गए और प्रेम की लीला में मस्त हो गए। इसी समय लक्ष्मी जी आईं। उनके मन में बड़ी हैरानी हुई।

आवी लखमीजी ऊभा रह्या, श्री भगवानजी तिहां जाग्रत थया।
लखमीजी करे विनती, अमे बीजो कोई देखतां नथी।। २१ ।।

लक्ष्मीजी आकर खड़ी रहीं। भगवानजी जब जागृत हुए तो लक्ष्मीजी ने विनती की कि हम आपके सिवा दूसरे किसी को देखते नहीं (जानते नहीं हैं)।

केहेनो तमे करो छो ध्यान, ते मूने कहो श्री भगवान।
मारा मनमां थयो संदेह, कही प्रीछवो मूने एह।। २२ ।।

हे भगवान! आप किसका ध्यान करते हो? यह मेरे मन में संशय हो गया है। मुझे समझा कर बताओ।

किहां वसे ने कीहो ठाम, ते मूने कहो श्री भगवान।
ए लीला सांभलू श्रवणे, वली वली लागूं चरणे।। २३ ।।

वह कहां रहता है, उसका ठिकाना कहां है, जिसका आप ध्यान करते हो। मैं इस लीला को अपने कान से सुनना चाहती हूं, इसलिए बार-बार आपके चरणों में प्रणाम करती हूं। हे भगवान! यह हकीकत मुझे बताओ।

Nijanand App

सांभलो लखमीजी कहूं तमने, ए आगे सिवे पूछ्यूं अमने।
पण ए लीलानी मूने खबरज नथी, तो केम कहूं तमने मुख थकी।। २४ ।।

भगवानजी कहते हैं, हे लक्ष्मीजी! सुनो, मैं तुम्हें कहता हूं। आगे भी शिवजी ने मुझसे पूछा था, परन्तु इस लीला की मुझे खबर ही नहीं है, तो अपने मुख से तुम्हें कैसे कहूं?

कहूं तमने सांभलो मारी वात, ए वचन रखे मुखथी करो प्रकास।
लखमीजी तमे कहो तेम करूं, म्हारू आप नथी कांई तमथी परूं।। २५ ।।

मैं तुमसे कहता हूं, मेरी बात सुनो। मैं अपने मुख से इसका वर्णन नहीं कर सकता। लक्ष्मीजी तुम जैसा कहो मैं वैसा करूं। मैं तुमसे कोई अलग नहीं हूं।

मुखथी वचन रखे ओचरो, नहीं तो घणूं थासे खरखरो।
चौद भवननी पूछो वात, ते तमने कहूं विख्यात।। २६ ।।

मुख से यह वचन मत कहो, नहीं तो बड़ा दुःख होगा। चौदह लोकों की बात पूछो तो तुमको विस्तार से बताऊं।

रखे आसंका आणो एह, एह रखे राखो संदेह।
लखमीजी तमे करो करार, मारा मुखथी वचन न आवे बहार।। २७ ।।

कोई संशय मत लाओ और न कोई सन्देह करो। हे लक्ष्मीजी! तुम आराम से बैठो। मेरे मुख से यह वचन बाहर ही नहीं आते।

त्यारे लखमीजी दुखाणा घणूं, मनसूं जाणे हूं केही पेर करूं।
मोसूं तां राख्यो अंतर, हवे करीस हूं केही पर।। २८ ।।

तब लक्ष्मीजी को बहुत दुःख हुआ। मन से विचार करने लगीं कि मैं क्या करूं? मुझसे तो बात छिपा ली अब मैं क्या करूं?

नेणे आंसू बहु जल झरे, अने वली वली रमा विनती करे।
धणी ए अंतर तां में न खमाय, जीव मारो आकुल व्याकुल थाय।। २९ ।।

लक्ष्मीजी की आंखों से आंसू टपकने लगे। बार-बार लक्ष्मीजी विनती करती हैं और कहती हैं कि हे धनी! यह अन्तर मुझसे सहन नहीं होता, मेरा जीव व्याकुल होकर दुःखी हो रहा है।

ए दुखतां में सह्यो न जाय, अने कालजडूं मारूं कपाय।
कंपमान थई कलकले, करे निस्वास अंतस्करन गले।। ३० ।।

यह दुःख मेरे से सहन नहीं होता। मेरा कलेजा फटा जा रहा है। ऐसा कहकर बिलख-बिलख कर रोने लगीं तथा सिसकियां भरने लगीं।

हवे जो धणी करो मारी सार, तो ए वचन केहेवुं निरधार।
तमे घणवे मूने वार्‌या सही, अनेक पेरे सिखामण कही।। ३१ ।।

हे धनी! यदि आप मेरी तरफ ध्यान दो तो एक वचन आपसे मैं कहूं। आपने बहुत तरह से मुझे रोका और समझाया।

पण मारो जीव केमे नव रहे, लखमीजी वली वली एम कहे।
त्यारे वली बोल्या श्री भगवान, लखमीजी तूं निश्चे जाण।। ३२ ।।

परन्तु मेरा जीव कैसे रहे? ऐसा लक्ष्मीजी बार-बार विनती करके कहती हैं। तब श्री भगवानजी बोले, हे लक्ष्मीजी! तुम निश्चय जानो।

Nijanand App

जो कोटाण कोट करो प्रकार, तो एटलूं तमे जाणो निरधार।
मारी जिभ्याए न वले एह वचन, ए द्रढ करो जीव ने मन।। ३३ ।।

चाहे करोड़ों उपाय तुम करो, तो भी इतना निश्चित जानो कि इन वचनों को कहने के लिए मेरी जुबान नहीं चलती (अर्थात् कहने की शक्ति मेरी नहीं है)। इस बात को विश्वास के साथ ग्रहण कर लो।

हवे लखमीजी कहे सांभलो राज, मारा जीवने उपनी अति दाझ।
स्यो वांक तमारो धणी, कांई अप्राप्त दीसे अम तणी।। ३४ ।।

अब लक्ष्मीजी कहती हैं, हे सर्वशक्तिमान! मेरे जीव में आग जल रही है। धनी! इसमें आपका कोई कसूर नहीं है। ऐसा लगता है कि मैं ही इसे प्राप्त करने की पात्र नहीं हूं।

हवे सरीर मारो केम रहे, जीव मारो मूने घणूं दहे।
हवे अग्यां मागूं मारा धणी, करूं आरम्भ तपस्या तणी।। ३५ ।।

अब मेरा तन कैसे रहे? मेरा जीव आग में बहुत जल रहा है। अब आपसे आज्ञा मांगती हूं कि मैं अब (पात्र बनने के लिए) तपस्या करूं।

त्यारे भगवानजी बोल्या तत्काल, लखमीजी म लावो वार।
त्यारे कलप्यो जीव दुख अनंत करी, उपनो वैराग सोक मन धरी।। ३६ ।।

तब भगवानजी तुरन्त बोले, हे लक्ष्मीजी! देर मत करो। तब लक्ष्मीजी का जीव बड़े दुःख से कलपने लगा। दुःख से वैराग्य पैदा हो गया।

जीवने आसा पूरण हती घणी, जाणुं मूने छेह नहीं दिए मारो धणी।
चरणे लागी लखमीजी चाल्या, अने रुदन करे जाय पाला पल्या।। ३७ ।।

उनके जीव को पूरा भरोसा था कि उनके धनी (भगवान विष्णु) उन्हें अलग नहीं करेंगे। अब लक्ष्मीजी भगवानजी के चरणों में प्रणाम करके रोते-रोते पैदल चल पड़ीं।

एणे समे विरह कीधो अति जोर, ते हूं केटलो कहूं बकोर।
एक ठामे बेठा दमे देह, श्री भगवानजीसुं पूरण सनेह।। ३८ ।।

इस समय उनको बहुत अधिक विरह उत्पन्न हुआ। कितना चिल्लाकर रोईं उसका बयान कैसे करूं? एक ठिकाने बैठकर वह देह का दमन करने लगीं (तन को कष्ट देने लगीं)। अपनी चित्त-वृत्ति बड़े प्रेम से भगवानजी में लगाई (भगवान विष्णु में ही)।

वाए तडको टाढक नव गणे, करे तपस्या जोर अति घणे।
सनेह धरी बेठा एकांत, एटले सात थया कल्पांत।। ३९ ।।

हवा, धूप, ठण्डक की परवाह न करते हुए जोर से तपस्या करने लगीं। एकान्त में बैठकर भगवान का ध्यान करते-करते सात कल्पान्त बीत गए।

त्यारे ब्रह्मा ने खीर सागर मली, आव्या वैकुंठ भगवानजी भणी।
एवडो स्वामीजी स्यो उतपात, लखमीजी तप करे कल्पांत सात।। ४० ।।

तब क्षीरसागर और ब्रह्माजी मिलकर भगवान (विष्णु) के पास आए और बोले, हे स्वामी! यह क्या उत्पात (झगड़ा) है कि लक्ष्मीजी सात कल्पान्त से तपस्या कर रही हैं।

Nijanand App

त्यारे भगवानजी एम बोल्या रही, जे वांक अमारो कांइए नहीं।
स्वामी तोहे वचन तमने केहेवाय, जे लखमीजी घणूं दुखी थाय।। ४१ ।।

तब भगवानजी इस तरह से बोले कि इसमें हमारा कोई कसूर नहीं है। तब दोनों ने कहा कि हे स्वामी! फिर भी तुम कुछ तो बताओ, लक्ष्मीजी बड़ी दुःखी हैं।

एवडो रोष तमे मां धरो, लखमीजी पर दया करो।
तमे स्वामी मोटा दयाल, लखमीजी दुख पामे बाल।। ४२ ।।

इतना गुस्सा मन में मत रखो। लक्ष्मीजी पर कृपा करो। हे स्वामी! तुम बड़े दयालु हो, लक्ष्मीजी अबोध हैं तथा दुःखी हैं।

अधखिण एक म लावो वार, लखमीजी तेडो तत्काल।
चरण ग्रह्या तिहां खीर सागरे, वली वली ब्रह्मा विनती करे।। ४३ ।।

दोनों कहते हैं कि आधे पल की भी देर न करें। लक्ष्मीजी को तुरन्त बुलाइए। तब क्षीरसागर ने भगवानजी के चरण पकड़ लिए, ब्रह्माजी बार-बार विनती करते हैं।

लखमीजी लगे चालो सही, तेडी आविए तिहां लगे जई।
त्यारे आव्या चाली श्री भगवान, लखमीजी बेठा जेणे ठाम।। ४४ ।।

वह दोनों कहते हैं कि लक्ष्मीजी के पास चलो तो सही। वहां चलकर उनको बुला लाएं। तब भगवानजी चलकर वहां आए जहां लक्ष्मीजी बैठी थीं।

त्यारे लखमीजीए कीधां परणाम, त्यारे वली बोल्या श्री भगवान।
लखमीजी तमे चालो घरे, त्यारे वली रमा वाणी ओचरे।। ४५ ।।

लक्ष्मीजी ने प्रणाम किया। तब भगवानजी बोले, लक्ष्मीजी घर चलो। लक्ष्मीजी फिर बोलती हैं।

म्हारा धणी तमे कहो तेज वचन, जीव घणूं दुख पामे मन।
जो तप करो कल्पांत एकवीस, तोहे न वले जिभ्या एम कहे जगदीस।। ४६ ।।

हे मेरे धनी! वही वचन कहो। हमारा जीव बड़ा दुःखी है। भगवानजी कहते हैं कि हे लक्ष्मीजी! तुम भले ही इक्कीस कल्पान्त तक तपस्या करो, फिर भी मेरी जुबान नहीं कहेगी।

पण देखाडीस हूं चेहेने करी, त्यारे तमे लेजो चित धरी।
त्यारे ब्रह्मा ने खीर सागर बे, लखमीजीने वचन कहे।। ४७ ।।

परन्तु मैं लीला करके तुम्हें दिखाऊंगा, तब तुम चित्त में धारण कर लेना। तब ब्रह्मा और क्षीरसागर दोनों ने लक्ष्मीजी से कहा।

लखमीजी उठो तत्काल, दया कीधी स्वामी दयाल।
हवे रखे तमे हठ करो, आनंद मनमां अति घणो धरो।। ४८ ।।

लक्ष्मीजी! तुरन्त उठो, दयालु भगवान ने कृपा कर दी है। अब तुम हठ मत करो। मन में आनन्दित होकर घर चलो।

त्यारे लखमीजी लाग्या चरणे, एम तेडी आव्या आनंद अति घणे।
ब्रह्मा ने खीर सागर वल्या, चरणे लागी अस्थानक आव्या।। ४९ ।।

तब लक्ष्मीजी ने चरणों में प्रणाम किया, इस तरह से बुलाकर अति आनन्द से घर आए। ब्रह्मा और क्षीरसागर चरणों में प्रणाम कर अपने-अपने घर वापस गए।

Nijanand App

हवे एह विचारी तमे जो जो साथ, न वली जिभ्या वैकुंठ नाथ।
ग्रही वस्त भारे करी जाण, नेठ वचन नव कह्या निरवाण।।५० ।।

अब इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे मेरे सुन्दरसाथ! तुम यह विचार करके देखो कि बैकुण्ठनाथ विष्णु भगवान की जबान नहीं खुली। पार की वस्तु को भारी जानकर हृदय में रखा। कोई वचन मुंह से नहीं निकाले।

नहीं तो वैकुंठ नाथने केही खबर, विना तारतम सूं जाणे मूलघर।
बीजिए खबर कांइए नव कही, तो पण निध भारे करी ग्रही।।५१ ।।

नहीं तो बैकुण्ठनाथ को क्या खबर? बिना तारतम के मूल घर की कैसे पहचान करें? दूसरे को खबर भी नहीं बताई। ऐसी भारी न्यामत समझकर अपने अन्दर ग्रहण कर रखा।

भारे विना भार न उपडे, मुखथी वचन जुआ केमे नव पडे।
ज्यारे थयो कृष्ण अवतार, रुकमणी हरण कीधूं मुरार।।५२ ।।

सामर्थ्य के बिना भार नहीं उठाया जाता। मुख से वचन क्यों नहीं निकलते? जब कृष्णावतार हुआ और उन्होंने रुक्मिणी हरण किया।

माधवपुर परण्या रुकमणी, धवल मंगल गाए सुहागणी।
गातां गातां लीधूं वृज नूं नाम, त्यारे पाछा भोम पड्या भगवान।।५३ ।।

माधवपुर जाकर रुक्मिणी के साथ शादी की। उस समय स्त्रियां मंगल गीत गा रही थीं। गाते-गाते उन्होंने ब्रज का नाम लिया तो भगवानजी गिर पड़े।

त्यारे सहु कोई पाम्यो मन अचरज, एम लखमीजीने देखाड्यूं वृज।
समा थई बेठा भगवान, लखमीजीनी एम भाजी हाम।।५४ ।।

तब सबको आश्चर्य हुआ। इस प्रकार लक्ष्मीजी को ब्रज की लीला बताई। भगवान शान्त होकर बैठ गए और लक्ष्मीजी की चाहना मिट गई।

ए विचार तमे जो जो रही, ए लीला सुकजीए कही।
जे लीला कीधी जगदीस, ते मांहें आपण हुता सरीख।।५५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सुन्दरसाथजी! इस हकीकत को शुकदेवजी ने बयान किया है। यह तुम देखो, जो लीला जगत के भगवान विष्णु ने की, उसमें हम शामिल थे (ब्रज की लीला हमारी थी)।

तो वचन तमने केहेवाय, नहीं तो अर्ध लवो नव प्रगट थाय।
आ वृजवालो वालो ते एह, वचन आपणने कहे छे जेह।।५६ ।।

हे साथजी! इसलिए तुमको यह वचन कहे हैं। नहीं तो आधे अक्षर की भी जानकारी न मिलती। यह ब्रज के वही वालाजी हैं जो अन्दर बैठकर अपने को वचन कह रहे हैं।

रास माहें रमाड्या जेणे, प्रगट लीला आ कीधी तेणे।
श्री धाम तणा धणी छे जेह, तेड़वा आपण ने आव्या तेह।।५७ ।।

जिन्होंने रास में रास खिलाया, यह लीला उन्होंने ही जाहिर की है, जो धाम के धनी हैं। वह हमको बुलाने के लिए आए हैं। [नोट—सार यही निकला कि धाम के धनी श्री प्राणनाथजी ने ही सब लीलाएं की हैं।]

Nijanand App

ते माटे तमने कह्यूं द्रष्टांत, जीवसूं वचन विचारो एकांत।
ठेकाणूं वैकुंठ विश्राम, केहेवा वालो श्री भगवान।।५८ ।।

इस वास्ते तुमको दृष्टान्त देकर कहा, एकान्त में अपने जीव में यह वचन विचारो। ऊपर के दृष्टान्त में कहने वाले भगवानजी हैं, जो वैकुण्ठ में रहते हैं।

लखमीजी तिहां श्रोता थया, केटलू खप करीने रह्या।
तोहे न पाम्या एक वचन, अने तमे कीहू लई बेठा छो धन।।५९ ।।

और लक्ष्मीजी यहां सुनने वाली हैं। वह अत्यधिक मेहनत करके एक वचन को भी प्राप्त न कर सकीं, तुम कौनसा धन लेकर बैठे हो?

हजिए न टालो तमे भरम, अने जीव कांय नव करो नरम।
आ नौतनपुरी कहिए नगरी, जिहां श्री देवचन्दजीए लीला करी।।६० ।।

अब तुम अपना भ्रम नहीं मिटाते। अपने जीव को क्यों नरम नहीं करते? यह वह नौतनपुरी नगरी है (चाकला मन्दिर) जहां श्री देवचन्द्रजी ने लीला की है।

आ प्रगट वचन कीधां अपार, तोहे न वली तमने सार।
अमल उतारो तमे जोपे करी, अनेजीव जगाओ वचन चित धरी।।६१ ।।

इन वचनों को उन्होंने तमाम तरीकों से कहा, फिर भी तुमको सुध नहीं आई। अपनी नींद का नशा उतार कर अच्छी तरह से देखो। उनके वचनों को विचार कर चित्त में रखो। जीव को जगाओ।

माया जुओ तमे अलगां थई, तारतमने अजवाले रही।
जे वाणी श्री धणिए कही, ते जीवने वचन केम दीजे नहीं।।६२ ।।

अब तुम तारतम के उजाले में माया देखो। जो वाणी धनीजी ने कही है, वह जीवों को हम क्यों न दें? अर्थात् देनी चाहिए।

हवे गुण सघलाने करो हाथ, अने ओलखो प्राणनो नाथ।
हवे एटलो जीवसूं करो विचार, जे केहा वचन आ कह्या आधार।।६३ ।।

अब तुम सब अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करो और अपने प्राणनाथ को पहचानो। अपने जीव से इतना विचार करो कि अपने प्राणनाथजी ने कौनसे वचन कहे हैं?

जिहां लगे जीव न विचारे मन मांहें, तो चोपडे घडे जेम छांटो थाए।
हवे इंद्रावती कहे सांभलो वात, चरणे लागूं मारा धामना साथ।।६४ ।।

जब तक जीव मन में विचार नहीं करता, तब तक चिकने घड़े पर छींटें नहीं लगतीं। श्री इन्द्रावतीजी धाम के सुन्दरसाथ के चरणों में लगकर कहती हैं कि मेरी बात सुनो।

वली वली नहीं आवे ए अवसर, रखे हाम लई जागो घर।
थोडा मांहें कह्यूं छे अति घणूं, अने जाण्यूं धन कां निगमो आपणूं।।६५ ।।

यह समय बार-बार नहीं आएगा। अपनी चाहना पूरी करके ही घर चलो। हमने इतनी बड़ी बात तुमसे थोड़े में कह दी है। अब जानकर भी अपने धन को मत गंवाइए।

Nijanand App

आगे आपण विहिला थया, तो श्री देवचन्दजीए वंचया।
नहीं तो केम वंचे आपणने एह, जो राख्यो होत कांई आपणे सनेह।। ६६ ।।

आगे भी हम धनी से विमुख हुए, तो श्री देवचन्द्रजी हमें छोड़ गए। यदि हमने उनसे स्नेह किया होता तो वह हमें कैसे छोड़ते?

हवे वली आव्या बीजी देह धरी, आपण ऊपर दया अति करी।
चेतन करी दीधो अवसर, लई लाभ ने जागिए घर।। ६७ ।।

हमारे ऊपर दया करके दुबारा तन धारण करके आए हैं, तुम्हें मौका देकर सावधान किया है। अब लाभ लेकर अपने घर चलें।

मनोरथ सर्वे पूरण थाए, जो आ द्रष्टांत जुओ जीव मांहें।
ते माटे इंद्रावती कहे फरी फरी, जो धणिए कृपा तमने करी।। ६८ ।।

हमारे मनोरथ पूर्ण तब होंगे जब हम इस दृष्टान्त को जीव में विचार कर देखें। श्री इन्द्रावतीजी इसलिए बार-बार कहती हैं कि धनीजी ने हमारे ऊपर मेहर की है।

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। ७४१ ।।

प्रगटवाणी प्रकासनी

सुईने सुई सूता सूं करो रे, आ विखम ठिकाणा मांहे जी।
जागीने जुओ उठी आप संभारी, एणी निद्राए लेवाणां कांय जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस कठिन ठिकाने (स्थान) में सोते-सोते क्या करोगे? जागो, देखो। उठकर अपने आपको संभालो। इस निद्रा में कुछ नहीं मिलने वाला।

एणी निद्राए जे कोई लेवाणा, नहीं ते आपणा साथी जी।
एणी रे भोमे घणां छेतरिया, तमे उठो इहां थकी जी।। २ ।।

इस माया में जिसने कुछ लिया है (माया की चाह की है) वह अपने साथी नहीं हैं। इस भूमि में बहुत लोग ठगे गए, इसलिए तुम यहां से उठो।

नहीं रे निद्रा कोई घेण धारण, निद्रा होय तो जगव्यो जागे जी।
उठाडी जीवने ऊभो कीजे, वली न मूके पोतानो माग जी।। ३ ।।

यह नींद नहीं है। यह तो कोई नशा है। नींद में हो तो जगा लें। उठाकर जीव को खड़ा कर लें और फिर अपना रास्ता न छोड़ें।

तेज गेहेन ने तेहज धारण, तेज घूटन अधको आवे जी।
एणी भोंमने ए निद्रा मांहेंथी, धणी विना कोण जगावे जी।। ४ ।।

यह वही नशा है। उसी नशे की नींद है। इससे जीव का दम घुटता है इस भूमि पर इस नींद से धनी बिना कौन जगाएगा?

एणे ठेकाणे तां कोई न उगरियो, तमे सूता तेणे ठाम जी।
ए ठाम घणूं विखम लागसे, प्रगट कहूं गत भोम जी।। ५ ।।

इस ठिकाने से कोई नहीं निकला। जिसमें तुम सोए पड़े हो, यह ठिकाना बहुत दुःखदाई लगेगा, इसलिए इस भूमि के गुण को बताती हूं।

Nijanand App